आओ करें सच्चा टीकाकरण

प्रत्येक वर्ष यह दिन टीकाकरण दिवस के रूप में मनाया जाता है। छोटे बच्चों को पोलियो का टीका लगाकर बीमारी से मुक्त करते हैं और वर्तमान समय तो कोविड का भी टीका लगाकर करोना जैसी खतरनाक बीमारियों से मुक्ति दिलाते हैं; लेकिन हमारे जीवन में कुछ-न-कुछ समस्यायें, परेशानियाँ किसी-न-किसी रूप में आती ही रहती हैं, उसके लिए क्या टीका लगायें, जो उनसे सदाकाल कैसे मुक्ति पा सकें? आज के युग में तो टीका लगने के बाद भी बीमारियाँ पूरी तरह खत्म नहीं होती हैं, लेकिन परमपिता परमात्मा आकर यह ज्ञान देते हैं कि वास्तव में भृकुटि-मध्य में ज्योतिबिंदु रूप आत्मिक स्थिति में टिकने को ही असली टीका लगाना कहते हैं। वेदों की ऋचा में भी आया है- मनरेव आत्मा मन-बुद्धि को ही आत्मा कहा जाता है। गीता में आया है- **भ्रुवोः मध्ये प्राणं आवेश्य सम्यक्** अर्थात् भृकुटि के मध्य में आत्मा निवास करती है। आत्मा की याद में ही भारतीय बहनें-माताएं भृकुटि-मध्य बिंदी लगाती हैं और पुरुष लोग टीका लगाते हैं; लेकिन यह सिर्फ़ परम्परा मात्र रह गई है। परमपिता परमात्मा आकर बताते हैं कि आत्मा और शरीर यह दो अलग-2 हैं। गीता में ही बताया है कि आत्मा तो अजर-अमर-अविनाशी है। सतयुग, त्रेता में देवताओं में आत्मिक स्थिति थी तो वहाँ पर सुख-शांति-समृद्धि थी। लेकिन हम अब उस आत्मा को और आत्मिक स्थिति को भूल गए हैं, इसलिए दुखी-अशांत-कंकाल हो गए हैं। करोना के चलते आप घर बैठे ही आध्यात्मिक विद्यालय वेबसाइट और यूट्यूब पर देख सकती हैं कैसे परमपिता परमात्मा फिर से वही नई दुनिया लाने के लिए गीता के यदा-2 हि धर्मस्य कथनानुसार इस सृष्टि पर आ चुके हैं और राजयोग व गीता-ज्ञान के माध्यम से हम सबको वही आत्मिक स्थिति में स्थित होना सिखाते हैं अर्थात् असली टीका लगाना सिखाते हैं, जिससे हमारा जीवन देवता समान सुख-शांति-समृद्धिपूर्ण बन जाता है।

ॐ शांति

www.pbks.info/www.adhyatmik-vidyalaya.com

Youtube-AIVV

Email- a11spiritual1@gmail.com

Mo. 9891370007, 9311161007